विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०४/०६/२०२० पञ्चम: पाठ: जननी तुल्यवत्सला

कश्चित् कृषक: बलीवर्दाभ्यां क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्नासीत्। तयो: बलीवर्दयो: एक: शरीरेण दुर्बल: जवेन गन्तुमशक्तश्चासीत्। अत: कृषक: तं दुर्बलं वृषभं तोदनेन नुद्यमान: अवर्तत। स: ऋषभ: हलमुढ्वा गन्तुमशक्त: क्षेत्रे पपात् । क्रुद्ध: कृषीवल:तमुत्थापयितुम् बहुवारम् यत्नमकरोत् । तथापि वृष: नोत्थित: ।

 # शब्दार्था:--बलीवर्दाभ्यां – बैलों से क्षेत्रकर्षणम -खेत जोतना कुर्वन् आसीत् -कर रहा था

बलीवर्दयो:-बैलों में। जवेन -तेजी से अशक्त:-असमर्थ

अवर्तत -हो गया ऋषभ:-बैल गन्तुमशक्त:-चलने में असमर्थ

क्रुद्ध:-क्रोधी(क्रोधित) कृषीवल:-किसान बहुवारम् -बहुत बार न उत्थित: -नहीं उठा

अर्थ -कोई किसान बैलों से खेत जोत रहा था ।उन बैलों में एक (बैल) शरीर से कमजोर और तेजी से चलने में असमर्थ (अशक्त) था। अत: किसान उस दुबले बैल को कष्ट देकर जबरदस्ती हांकने लगा ।वह बैल हल को उठाकर चलने में असमर्थ होकर खेत में गिर पड़ा।क्रोधित किसान उसको उठाने के लिए बहुत बार प्रयत्न किया । तो भी बैल नहीं उठा ।